नया ज्ञानोदय

अगस्त-नवम्बर 2024
पृष्ठ 176
मूल्य : 100 रुपये

कथेतर विशेषांक

भारतीय ज्ञानपीठ

नया ज्ञानोदय
अगस्त-नवम्बर 2024
कथेतर विशेषांक

भारतीय ज्ञानपीठ

संस्थापक

श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शांति प्रसाद जैन

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

अंक : 228-229 | अगस्त-नवंबर 2024

सम्पादक

मधुसूदन आनन्द

सह-सम्पादक

महेश्वर, प्रभाकिरण जैन

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-110 003
फोन : 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com,
bookclub@jnanpith.net,
gmbharatiyajnanpith@gmail.com

वेबसाइट : www.jnanpith.net

Naya Gyanodaya
A Literary Bi-monthly Magazine
Editor : Madhu Sudan Anand
Language : Hindi
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road,
New Delhi-110 003

इस अंक का मूल्य :
100 रुपये (संयुक्तांक) + 30 रुपये (डाक खर्च)

व्यक्तियों / संस्थाओं के लिए :
वार्षिक (6 अंक) : 360 रुपये (डाक खर्च सहित)
वार्षिक (6 अंक) : 460 रुपये (डाक खर्च सहित)

नया ज्ञानोदय रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगाने हेतु डाक व्यय अतिरिक्त

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से उपर्युक्त पते पर भेजें।

(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ़्ट से)

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

आवरण व साज-सज्जा : महेश्वर, भीतरी रेखांकन : संदीप राशिनकर

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

नया ज्ञानोदय

सदस्य बनें

व्यक्तियों / संस्थाओं के लिए :

वार्षिक (6 अंक) : 360 रुपये (डाक खर्च सहित)

वार्षिक (6 अंक) : 460 रुपये (डाक खर्च सहित)

नया ज्ञानोदय रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगाने हेतु डाक व्यय अतिरिक्त

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ' (Bharatiya Jnanpith) के नाम से भेजें।
(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)

सम्पादक : मधुसूदन आनन्द | **सह-सम्पादक** : महेश्वर

भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110 003

www.jnanpith.net

साहित्य, समाज, संस्कृति और
कलाओं पर केन्द्रित

अंक : 228-229
अगस्त-नवंबर 2024
पृष्ठ : 176 (आवरण सहित)

www.jnanpith.net

अनुक्रम

शिवरानी देवी

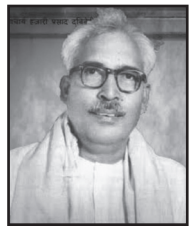
हजारीप्रसाद द्विवेदी

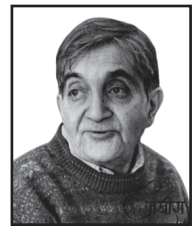
निर्मल वर्मा

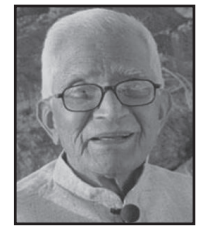
अमृतलाल वेगड़

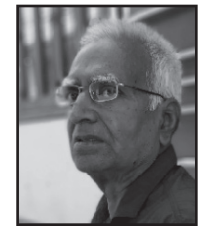
अशोक अग्रवाल

जितेन्द्र भाटिया

सम्पादकीय / 5
कथेतर का भविष्य और भविष्य में कथेतर : उमा शंकर चौधरी / 6

शुरुआत
सरयूपार की यात्रा : भारतेंदु हरिश्चंद्र / 18
महाजनी सभ्यता : प्रेमचंद / 20
सोयी हुई जातियाँ पहले जगेंगी : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' / 24
लिखूंगा क्यों नहीं? उपनाम रखना पड़ेगा : शिवरानी देवी / 25
महात्मा गाँधी : जैनेन्द्र कुमार / 32
मैं क्यों लिखता हूँ? : अज्ञेय / 35
कुटज : हज़ारीप्रसाद द्विवेदी / 37

अपूर्व
नीलकंठ : महादेवी वर्मा / 42
राम जी की चींटी– राम जी का शेर : धर्मवीर भारती / 45
डबरे पर सूरज का बिम्ब : मुक्तिबोध / 48
पुस्तकों को चाहिए... : मोहन राकेश / 51
ईश्वर रे, मेरे बेचारे...! : फणीश्वरनाथ रेणु / 54
गौरी-मार्ग और कामुक मेघ : कुबेर नाथ राय / 56
मैंने माण्डू नहीं देखा : स्वदेश दीपक /60
मौन : रघुवीर सहाय / 65
गहरी नींद के सपनों में बनता हुआ देश : राजेन्द्र माथुर / 68
पत्थर और पानी : नेत्र सिंह रावत / 71
मेरे राम का मुकुट भीग रहा है : विद्यानिवास मिश्र / 74
अनुवाद प्रशिक्षण भी है... : राजेंद्र यादव / 77
महेश्वर से चौबीस अवतार (ओंकारेश्वर) : अमृतलाल वेगड़ / 79
चीड़ों पर चाँदनी : निर्मल वर्मा / 82
सज्जन, दुर्जन और काँग्रेसजन : हरिशंकर परसाई / 85
रचनावली के बहाने रघुवीर सहाय स्मरण : मनोहरश्याम जोशी / 87

विकास
एक लेखक की बरसाती : अशोक अग्रवाल / 92
चल पड़ी थी मेरे साथ मुर्दहिया भी : तुलसी राम / 99
मरे हुए पशु को उठाना : ओमप्रकाश वाल्मीकि / 101
गंगा स्नान करने चलोगे? : विश्वनाथ त्रिपाठी / 104
नदी, जंगल और बाउल की तान! : जितेंद्र भाटिया / 107

अभी बिल्कुल अभी
तालाबंदी के दिनों में एक और सैर : मंगलेश डबराल / 114
नान्त में इन्दराज़ : अशोक वाजपेयी / 118
सुबह की चाय : विष्णु नागर / 119
क़िस्सा दारूलकुहला : राजेश जोशी / 125
चार टुकड़े : असद ज़ैदी / 128
'दुख ही जीवन की कथा रही' : कुलदीप कुमार / 131
जालंधर से दिल्ली वाया इलाहाबाद : अखिलेश / 133
कृष्ण : चंचल / 145
मरकर भी बना रहेगा मां का लौट-लौट आना : नरेंद्र गौड़ / 147
जब से आँखें खुली हैं : लीलाधर मंडलोई / 149
मोतीपुर के जंगल में शुक्लाइन चाची : प्रदीप कुमार / 153
डायरी 1983 : जयशंकर / 157
आँसुओं सरीखा कोई भी मिलकर नहीं गया मुझसेः प्रभात / 162
नवजीवन को आशीष : बलराम / 166
स्मरण विस्मरण : यादवेन्द्र / 170
एक 'छुअन' की याद : योगेन्द्र आहूजा / 174

ज्ञान गरिमा के 80 वर्ष
भारतीय ज्ञानपीठ

कथेतर पर केन्द्रित

जिन लोगों ने सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, निर्मल वर्मा, अमृतलाल वेगड़, नेत्र सिंह रावत, अशोक अग्रवाल, मंगलेश डबराल, कवि प्रभात, विष्णु नागर, योगेन्द्र आहूजा आदि जैसे लेखकों के संस्मरण पढ़े होंगे, वे जानते होंगे कि कथेतर साहित्य का वैभव क्या होता है। बेशक हिंदी में कोई जॉर्ज ऑरवेल या वर्जीनिया वुल्फ जैसा ख्याति प्राप्त लेखक या लेखिका न हुआ हो, लेकिन अपने संस्मरणों, रेखाचित्रों, आत्मकथाओं, पत्रों और डायरियों आदि द्वारा हिंदी के लेखकों, कथाकारों और रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, मनोहर श्याम जोशी और राजेंद्र माथुर जैसे संपादकों ने कथेतर का जो संसार रचा है, वह अंग्रेजी और अन्य भाषाओं द्वारा रचे गए कथेतर साहित्य को टक्कर देने के लिए पर्याप्त हैं। यह एक रचनात्मक भाषा के रूप में हिंदी की शक्ति और सामर्थ्य को प्रतिबिंबित करता है। यही कारण है कि ज्ञानोदय ने कथेतर पर केंद्रित एक विशेषांक निकालने का साहस किया है।

जाहिर है ऐसे साहित्यिक अनुष्ठानों की एक सीमा होती है लेकिन हमने कथेतर के बीजारोपण से लेकर उसके पुष्पित और पल्लवित होने के समूचे परिदृश्य को यथासंभव देने की पूरी कोशिश की है। हमने इतनी सामग्री जुटा ली कि अन्त में काफी कुछ रोकनी पड़ी। इस सामग्री को हम आगामी अंकों में देने का प्रयास करेंगे। काफी कुछ सामग्री हमने विभिन्न प्रकाशकों की पुस्तकों से जुटायी है जिसके लिए हम उन प्रकाशनों के आभारी हैं। अनुक्रम में पैटर्न ढूंढने की कोशिश कृपया न करें। वैसे भी हमारा पूरा प्रयास कथेतर हिंदी साहित्य की एक झलक दिखाना है, न कि उसकी आलोचना तुलना या विश्लेषण आदि करना।

मानव के विकास में कथा तत्व, कविता और नाटक से भी पहले आता है। एक वक्त ऐसा था जब नाटक लिखने को सबसे अव्वल माना जाता था। इसके कुछ बाद कविता केंद्र में आई। फिर कथा और उपन्यास को अपनी जगह बनाने के लिए उद्यम करना पड़ा। कथेतर को सृजनात्मक साहित्य के रूप में कविता-कहानी-उपन्यास सरीखी आम मान्यता अभी नहीं मिली है और हिंदी (खड़ी बोली) के मामले में तो यही स्थिति है। जरूरत शायद उस आम फहम हिंदुस्तानी भाषा को विकसित करने की है जो गांधी जी के शब्दों में कहें तो उत्तर भारत के हिंदू-मुसलमान बोलते हैं और ग़ालिब जैसे शायर लिखते थे। खैर यह एक अलग अध्याय है। आज हिंदी बिल्कुल अलग संकटों और विकृतियों से जूझ रही है।

बहुत शुभकामनाओं और इन आशाओं-अपेक्षाओं के साथ कि आपका प्यार इस विशेषांक को मिलेगा और हमारी कर्मियों की तरफ भी आप इंगित करेंगे।

—सम्पादक